काप्यभिख्या तयोरासीद् व्रजतोः शुद्धवेषयोः ।

हिमनिर्मुक्तयोर्योगे चित्राचन्द्रमसोरिव ।।46।।

अन्वय व्रजतोः शुद्धवेषयोः तयोः हिमनिर्मुक्तयोः चित्राचन्द्रमसोः इव योगे (सती) काऽपि अभिख्या आसीत्।

अनुवाद (शिशिर ऋतु के पश्चात् चैत्र पूर्णिमा में) कोहरे से मुक्त हुए चित्रा नामक नक्षत्र तथा चन्द्रमा का परस्पर योग हो जाने पर जो शोभा होती है वैसी ही अपूर्व शोभा शुद्ध वेष (उजले वस्त्र) वाले महाराज दिलीप और सुदक्षिणा की मार्ग में जाते हुए हो रही थी।

टिप्पणियां

व्रजतो व्रजन्ती च व्रजंश्च इति व्रजन्तौ, तयोः व्रजतोः गच्छतौः (एकशेषद्वन्द्व) व्रज् शतृ षष्ठी विभक्ति द्विवचन, उन दोनों जाते हुओं के या जाते हुओं की।

अभिख्या शोभा। अभि उपसर्ग ख्या धातु अङ्।

चित्रा चित्रा च चन्द्रमाश्च इति चित्राचन्द्रमसौ (द्वन्द्व) तयोः। सत्ताईस (27) नक्षत्रों के समूह में चित्रा चौदहवें (14) नक्षत्र का नाम है, जो आकाश में मोती के समान चमकता है। यह नक्षत्र चैत्र मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा के साथ रहता है.अर्थ है, जिस प्रकार चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा का योग होने पर उनकी शोभा होती है, उसी प्रकार सुदक्षिणा और दिलीप की शोभा थी। यहाँ चित्रा एवं चन्द्र संयोग उपमान है तो महाराज

दिलीप एवं रानी सुदक्षिणा उपमेय। दोनों (उपमान एवं उपमेय) में वैधर्म्यरहित साधर्म्य के कथन से यहाँ उपमा अलंकार है।

हिम हिमात् निर्मुक्तयोः (पंचमी तत्पुरुष), धुंध या कोहरे से रहित। शिशिर ऋतु व्यतीत हो जाने के पश्चात् कोहरा हट जाने से चैत्र मास में चित्रा और चन्द्रमा उज्जवल हो उठते हैं और धवल सुषमा बरबस मन को मोह लेती है।

काऽपि अनिर्वचनीया, अद्वितीय अभिख्या (शोभा)